राजस्थान के शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में संचालित द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की वर्तमान में प्रासंगिकता एक अध्ययन

शिक्षा शास्त्र में

पी.एच.डी की उपाधि हेतु

शोध प्रारूप

निर्देशिका

JV'n डॉ. मंजू शर्मा

शोधार्थी

JV'n दीपिका शर्मा

शिक्षा शास्त्र संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

2019

राजस्थान के शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में संचालित द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की वर्तमान में प्रासंगिकता एक अध्ययन

प्रस्तावना

मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा विहीन व्यक्ति जीवन के परम् लक्ष्य की प्राप्ति में सदैव असफल रहता हे। जीवन के सर्वागीण विकास के लिए शिक्षा ही एक मात्र ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी जन्मजात शक्तियों को विकसित करके अपने व्यवहार तथा विचारों में निरन्तर परिवर्तन, परिमार्जन एवं परिवर्द्धन कर सकता है। जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में शिक्षा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा अपने चारों ओर की चीजों को सीखने की एक प्रक्रिया है। यह हमें किसी भी वस्तु या परिस्थिति को आसानी से समझने किसी भी तरह की समस्या से निपटने और पूरे जीवनभर विभिन्न आयामों में संतुलन बनाए रखने में मदद करती है।

शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षक समाज का आईना है। शिक्षक, शिक्षा व समाज को जोडने वाली महत्वपूर्ण कडी है। जीवन के रास्ते में मार्गदर्शन हेतु ईश्वर ने अपने प्रतिनिधि के रूप में शिक्षक का चयन किया है। शिक्षक को राष्ट्र के भविष्य का निर्माता कहा जाता है। शिक्षक का पहला लक्ष्य होता है कि वह विद्यार्थी को ज्ञानवान और सुसंस्कृत बनाने के लिए अपने दायित्व का पालन करें। विद्यार्थी गीली मिट्टी की तरह होते है। शिक्षक ही उनमें नैतिक शिक्षा एवं भौतिक ज्ञान देकर उनहें समाज में एक अच्छे नागरिक के आकार में ढालता है। शिक्षक

सभी शैक्षिक कार्यक्रमों की आधारशिला या धुरी है जिनमें पाठ्यक्रम पाठ्यवस्तु, पाठ्यपुस्तकें, मूल्याकंन, शिक्षण विधियां तथा शिक्षण उद्देश्य आदि आते है। अतः वर्तमान में देश को गुणों एवं क्षमताओं से युक्त ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो देश की उन्नति में सहायक हो। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र की शिक्षा पद्धति पाठ्यक्रम तथा विशेष रूप से शिक्षकों पर निर्भर करती है। आज जो दिन प्रतिदिन शिक्षा का व्यावसायीकरण तथा प्रौद्योगिकरण हो रहा है। उसके कारण कई बदलाव हो रहे है। इसी बदलाव को समझने के लिए शिक्षकों के लिए उचित शिक्षक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।

शिक्षक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है जो भावी शिक्षकों को एक कुशल, योग्य एवं सफल शिक्षक बनने के लिए प्रदान की जाती है। शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि शिक्षकों की शिक्षा ''अध्यापक शिक्षा'' के चरित्र को भी समझा और बदला जाये। अध्यापक शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे शिक्षक मननशील बन सके और अपने विद्यार्थियों को भी इस ओर अग्रसर कर सके। अध्यापक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षकत्व को पूर्ण रूप से विकसित होने के अवसर प्रदान करना है। शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के बीच ऐसी क्षमताओं को पोषित एवं पल्लवित करना है जो उन्हें एक सच्चा और प्रभावी शिक्षक बनने मे ंसहायता करेगी। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में ''एक अध्यापक तब तक नहीं सिखा सकता जब तक कि वह स्वयं सीख न रहा हो, ठीक उसी तरह जैसे एक दीपक दूसरे दीपक को प्रज्जवलित नही कर सकता जब तक उसकी स्वयं की ज्योति जलती न रहे।''

अध्यापक शिक्षा का संबंध सिर्फ शिक्षण कला में निपुणता से नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य भावी शिक्षकों का व्यक्तिगत, सामाजिक, व्यावसायिक एवं नैतिक विकास कर उन्हें अध्यापक के विभिन्न उतरदायित्वों को सफलतापूर्वक एवं प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न करने योग्य बनाना है। एक सुव्यवस्थित, सुविचारित अध्यापक शिक्षा अनेक पीढियों पर अपना सकारात्मक

प्रभाव अंकित करती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इस अध्यापक शिक्षा की प्रक्रिया से जो शिक्षक प्रशिक्षु गुजरते है वे अनेक पीढियों को अपने नजरिए के अनुसार शिक्षित करने का प्रयास करते है। शिक्षक शिक्षा का क्षेत्र शिक्षा के तीनों निर्धारित उद्देश्यों ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक से संबंधित है। इसलिए शिक्षक शिक्षा में प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम दोनों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। शिक्षक शिक्षा में पाठ्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

पाठ्यक्रम सीखने सीखाने की क्रिया का आधार होता है। पाठ्यक्रम के द्वारा आदतों एवं व्यवहारों में परिवर्तन लाया जाता है। उचित पाठ्यक्रम से शिक्षक को विषयगत ज्ञान मनोवैज्ञानिक ज्ञान व्यक्तिगत तथा सामाजिक समस्याओं से संबंधित अनुभव प्राप्त होता है। अध्यापक शिक्षा की पूरी पाठ्यचर्या ज्ञान के कुछ विशिष्ट खंडों में विभाजित की गयी है। जिसमें शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य को शामिल किया गया है। एक अच्छे अध्यापक के लिए न केवल कक्षा शिक्षण मे प्रवीण होना आवश्यक है बल्कि उसे एक शिक्षक के रूप में शिक्षक के अन्य दायित्वों से पालन में पांरगत होने की आवश्यकता है। परीक्षा एवं मूल्याकंन, अनुशासन विद्यालय प्रशासन, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संचालन, समाज में शिक्षा की महता की स्थापना जैसे कार्य भी अध्यापक को करने होते है और शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान उसे इन विभिन्न प्रकृति के कार्यो के संपादन के लिए तैयार कारता है। शिक्षक को अपने विषयगत ज्ञान के अलावा शिक्षण कला में निपुण होना भी आवश्यक है इसके लिए उन्हें पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम करवाया जाता है। किसी कार्य विशेष को कुशलता के साथ का करने के लिए ज्ञान कुशलता, अभिरूचि तथा क्षमताओं में वृद्धि की प्रक्रिया को प्रशिक्षण कहते है। शिक्षक शिक्षा में प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को उनके वर्तमान तथा आगामी कार्यो से परिचित करवाना तथा उसके लिए सक्षम बनाना है।

प्रशिक्षण का संबंध अधिगम से होता है ताकि कार्य का संपादन उचित प्रकार से विशिष्टता के साथ किया जा सके तथा व्यवसाय विशेष में निपुणता प्राप्त की जा सके। प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृति में परिवर्तन करना है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्राध्यापकों को ऐसे अनुभव प्रदान किये जाते है जिसके द्वारा वे अपने छात्रों और अपने व्यवसाय के प्रति धनात्मक अभिवृति विकसित कर सके। इसलिए छात्राध्यापकों में ज्ञान एवं कौशल के विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकता है। इससे शिक्षक न्यूनतम समय में अधिक कार्यकुशल बनते है। एक शिक्षक को निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है –

- प्रस्तुतीकरण व शिक्षण कला में निपुणता के लिए
- व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने के लिए
- अच्छे समायोजन के लिए
- छात्रों को दैनिक समस्याओं से संबंधित जानकारी के लिए
- शिक्षकों की कार्यकुशलता को बढाकर उनकी सोच एवं व्यवहार में मानवीय गुणों का विकास करने के लिए

एक शिक्षक को कक्षा में विभिनन सामाजिक–आर्थिक संस्कृति वाले एवं विभिन्न व्यक्तित्व के विद्यार्थियों से सामना करना पडता है। तकनीकी क्रांति एवं वैश्वीकरण के कारण विद्यार्थियों की आकांक्षाओं का स्तर भी दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है। विभिन्न मानसिक योग्यताओं एवं व्यक्तित्व के विद्यार्थियों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक समावेशी वातावरण बनाने की आवश्यकता है। बदलते समय की मांग को पूराक रने के लिए तथा जस्टिस वर्मा समिति की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए NCTE ने शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के लिए नवीन मानदंड एवं मानक तेयार किए है। इन नियमों की तहत् ही NCTE ने बी.एड. पाठ्यक्रम की समय सीमा वर्ष 2015 से दो वर्ष की

कर दी है। नवीन बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में तीन विस्तृत क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है–

- Perspective in Education
- Curriculum and Pedagogic studies
- Engagement with the field

इस नवीन द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम को बेहतर बनाने की कोशिश की गयी है। इस पाठ्यक्रम में छात्राध्यापकों के उचित प्रशिक्षण के लिए 1. बाल्यावस्था एवं विकास प्रक्रिया, 2. समकालीन भारत एवं शिक्षा, 3. अधिगम एवं शिक्षण, 4. भाषा एवं पाठ्यक्रम 5. संकाय एवं विषयों की समझ 6. ज्ञान एवं पाठ्यक्रम, स्वास्थ्य, शारीरिक आदि विषयों को सम्मिलित किया गया है। इस पाठ्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण भाग इन्टर्नशिप कार्यक्रम है। यह छात्राध्यापकों को विद्यालयी वातावरण को जानने एवं समझने में उन की सहायता करता है। NCTE द्वारा प्रैक्टिस टिचिंग के स्थान पर इंटर्नशिप कार्यक्रम को लागू किया है। यह कार्यक्रम प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए 1 माह तथा द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों के लिए 4 माह का होगा। इसमें छात्राध्यापकों शिक्षण के साथ साथ विद्यालय में होने वाली सभी गतिविधियों में भाग लेना होगा।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित सभी प्रकार की पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं, प्रकाशित अप्रकाशित शोध प्रबन्ध एवं अभिलेखों आदि से है। किसी भी शोध कार्य के अन्तर्गत संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण बहुत ही आवश्यक अंग होता है। जिसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी व्यवस्था के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती है।

1. **आर, नटराज (2016) ने** ''एटीट्यूड ऑफ टीचर ट्रैनीज टुवर्डस टु ईयर बी.एड. प्रोग्राम एंड दिअर फ्यूचर'' पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की बी.एड. टू ईयर प्रोग्राम तथा उसके भविष्य के प्रति अभिवृति जानना था। न्यादर्श हेतु कर्नाटक के 200 बी.एड. विद्यार्थियों का चयन किया गया। आंकडों के लिए बंद प्रश्नावली का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त आंकडो से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि बी. एड. विद्यार्थियों ने टू ईयर बी.एड. प्रोग्राम को सही नहीं माना परन्तु उन्होने यह भी स्वीकार किया कि इससे छात्राध्यापकों की योग्यता में वृद्धि होगी।
2. **कुमार, अशोक (2015)** ने ''एटीट्युड ऑफ पुपिल टीचर्स टुवर्डस इंटर्नशिप एज ए पार्ट ऑफ बी.एड. करिक्यूलम इन रिलेशन टु जेंडर स्ट्रीम एंड एकेडमिक क्वालिफिकेशन'' पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न लिंग, संकाय एवं योग्यता वाले बी.एड. विद्यार्थियों की इंटर्नशिप प्रोग्राम के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना था। न्यादर्श हेतु 80 छात्राध्यापकों का चयन किया तथा आंकडों के संकलन हेतु स्वनिर्मित अभिवृति मापनी का प्रयोग किया। अनोवा परीक्षण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विभिन्न लिंग, संकाय एवं योग्यता वाले बी.एड. विद्यार्थियों की इंटर्नशिप प्रोग्राम के प्रति अभिवृति में सार्थक अंतर है।
3. **सुषमा, आर (2014) ने** ''एटीट्युड ऑफ टीचर एज्यूकेटर्स टुवर्डस टु ईयर बी.एड. प्रोग्राम'' पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य बी. एड. टु ईयर प्रोग्राम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षकों की अभिवृति का लिंग, संस्था एवं अनुभव के आधार पर अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में 300 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया। प्राप्त आंकडों से यह निष्कर्ष निकला कि शिक्षक प्रशिक्षकों की लिंग, संस्था एवं अनुभव आदि के आधार बी.एड. टु ईयर प्रोग्राम के प्रति अभिवृति में सार्थक अंतर नहीं था।

4. **रंजन, राकेश (2012) ने** ''ए स्टडी ऑफ प्रैक्टिस टीचिंग प्रोग्राम : ए ट्रांजिश्नल फेज फॉर स्टूडेन्ट टीचर्स'' पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रैक्टिस टीचिंग प्रोग्राम के दौरान छात्राध्यापकों के अनुभवों का अध्ययन करना था। न्यादर्श के लिए गुजरात के वल्लभ विद्यानगर एवं आनन्द क्षेत्र के 189 बी.एड. विद्यार्थियों को शामिल किया गया। अर्द्धसंरचित साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा आंकडों का संकलन किया गया। प्राप्त आंकडों का विश्लेषण करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्राध्यापको को प्रैक्टिस टीचिंग बहुत रूचिपूर्ण लगती है तथा छात्राध्यापकों का यह मानना है कि प्रैक्टिस टीचिंग उन्हें शिक्षण कार्य के योग्य बनाती है।
5. **गुप्ता, तारकेश्वर (2012) ने** '' बी.एड.विद्यार्थियों की प्रशिक्षण के प्रति शैक्षिक अभिवृति'' का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उतराखण्ड के विश्वविद्यालय एवं राजकीय महाविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे सत्र 2012–13 के बी.एड. विद्यार्थियों की प्रशिक्षण के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में 140 विद्यार्थियों का चयन किया। आंकडों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि तथा स्वनिर्मित छात्राध्यापक अभिवृति मापनी का उपयोग किया तथा परिणाम में पाया कि विश्वविद्यालय एवं राजकीय महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृति में सार्थक अंतर है।
6. **भार्गव, ए (2009) ने** ''टीचिंग प्रैक्टिस फॉर स्टूडेन्ट टीचर ऑफ बी.एड. प्रोग्राम इश्यूज, प्रेडिकमेन्टेस एंड सजेशन्स पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य छात्राध्यापकों की टीचिंग प्रैक्टिस से संबंधित राय, मुद्दे एवं अनुभवों का अध्ययन करना था। इस शोध परिणाम में पाया कि छात्राध्यापक टीचिंग प्रैक्टिस के दौरान बहुआयामी समस्याओं का सामना करते है। जिससे शिक्षण कार्य में आवश्यक अनुभव कौशल और आत्मविश्वास में कमी आ जाती है। छात्राध्यापकों ने यह भी स्वीकार

किया कि जब पर्यवेक्षक कक्षा में प्रेक्षण हेतु बैठते है तब वे पाठ्यवस्तु भूल जाते है तथा असहज महसूस करते है।

7. **दोराई एम थाम्बी (2008) ने** ''इम्पेक्ट ऑफ टीचिंग प्रोग्राम अपोन द सेल्फ कन्सेप्ट ऑफ बी.एड. स्टुडेन्ट'' पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य छात्राध्यापकों के आत्म सम्प्रत्यय पर टीचिंग प्रोग्राम के प्रभाव का अध्ययन करना था। न्यादर्श के लिए तमिलनाडू की 200 महिला बी.एड. विद्यार्थियों को लिया गया। आंकडों के संकलन हेतु मोहसिन की आत्म सम्प्रत्यय अनुसूची का प्रयोग किया तथा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि टीचिंग प्रैक्टिस प्रोग्राम के पश्चात बी.एड. महिला विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में वृद्धि हुई है।
8. **रेड्डी, ए.वी.भास्कर (2007) ने** ''परसेप्शन ऑफ बी.एड. स्टुडेन्ट टीचर्स टुवर्डस टीचिंग प्रैक्टिस प्रोग्राम'' पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न संकाय एवं लिंग के बी.एड. विद्यार्थियों का टीचिंग प्रैक्टिस प्रोग्राम के प्रति अनुभव का तुलनात्मक अध्ययन करना था। न्यादर्श के लिए 300 बी.एड.विद्यार्थियों का चयन किया। आंकडो से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि महिला एवं पुरूष बी.एड. विद्यार्थियों के प्रैक्टिस टीचिंग के प्रति अनुभव में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि विभिन्न संकाय के बी.एड. विद्यार्थियों के प्रैक्टिस टीचिंग के प्रति अनुभव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
9. **मिश्रा, लोकनाथ (2007)** ने ''रिएक्शन ऑफ पुपिल टीचर्स ऑफ टु ईयर बी.एड कोर्स टुवटर्डस टीचिंग एण्ड टीचर एज्युकेशन पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों का शिक्षण एवं शिक्षक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना था। न्यादर्श के लिए भुवनेश्वर उडीसा के 48 प्रथम वर्ष के एवं 32 द्वितीय वर्ष के बी.एड. विद्यार्थियों का चयन किया। आंकडों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया। निष्कर्ष में यह प्राप्त

हुआ कि योग्य शिक्षक बनने के लिए द्विवर्षीय पाठ्यक्रम आवश्यक है तथा इससे छात्राध्यापकों को श्रेष्ठ प्रशिक्षण प्राप्त होता है।

विदेशी अध्ययन

1. **हीरालाल, प्रेमजी और बयागा, एनास (2011)** ने ''प्री सर्विस टीचर्सएक्सपीरियंस ऑफ टीचिंग प्रैक्टिस : केस ऑफ साउथ अफ्रीकन युनिवर्सिटी पर अपना शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रैक्टिस टीचिंग के दौरान छात्राध्यापकों को होने वाले अनुभवों का अध्ययन करना था। न्यादर्श के लिए 43 बी.एड. विद्यार्थियों का चयन किया गया। आंकडों का संकलन अर्द्धसंरचित साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा किया। प्राप्त आंकडों का गुणात्मक विश्लेषण करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि प्रैक्टिस टीचिंग के दौरान बी.एड. विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त हुए तथा इससे उनकी शिक्षण कला में दक्षता आयी है।
2. **मो. अजीम (2010) ने** ''प्रोब्लमस ऑफ प्रोस्प्रेक्टिव टीचर्स ड्यूरिंग टीचिंग प्रैक्टिस पर अपना शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रैक्टिस टीचिग के दौरान उत्पन्न कक्षा शिक्षण की समस्याओं का अध्ययन करना तथा विभिन्न विषयों में प्रैक्टिस टीचिग की आवश्यकता जानना था। न्यादर्श के रूप में लाहौर के 100 बी.एड. विद्यार्थियों को लिया। आंकडों के संकलन के लिए प्रश्नावली का निर्माण किया तथा प्राप्त आंकडों से यह निष्कर्ष निकला कि बी.एड. विद्यार्थियों को प्रैक्टिस टीचिंग से संबंधित नियमों की जानकारी नहीं थी तथा उन्हें टीचिंग से पूर्व विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रशिक्षण प्राप्त नही था।

अध्ययन का औचित्य

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके लक्ष्य व्यक्ति समाज और देश की बुनियादी जरूरतों के अनुसार निर्धारित किए जाते है। अतः इस प्रक्रिया में बदलाव आना स्वाभाविक है। शिक्षा में बदलाव एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। समय समय पर शैक्षिक मूल्यों, पाठ्यचर्या पाठ्य सामग्री सीखने सीखाने के तरीके, आंकलन की प्रक्रिया में गुणात्मक सुधार के लिए शैक्षिक प्रक्रिया में बदलाव किये जाते है। वर्तमान में शैक्षिक प्रक्रिया के केन्द में बालक है परन्तु पूरी शिक्षा व्यवस्था शिक्षक के कंधों पर टिकी हुई है। समय के साथ शिक्षक की भूमिकाओं में बदलाव आया है लेकिन आज भी शिक्षा की जिम्मेदारी मूल रूप से शिक्षक पर आ जाती है। अतः शिक्षा के उचित विकास के लिए देश को योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता है जिसके कारण शिक्षक शिक्षा मे मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता महसूस हुई। इसलिए NCTE द्वारा वर्तमान में शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम को 1 वर्ष से बढा कर 2 वर्ष का कर दिया तथा प्रैक्टिस टीचिंग के साथ साथ इन्टर्नशिप कार्यक्रम को लागू किया गया है। इसका उद्देश्य शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण प्रदान करना उनकी प्रभावशीलता एवं व्यक्तित्व को मजबूत बनाना तथा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहार एवं शिक्षण कौशल को समय के अुनसार परिवर्तित करना था। जिससे शिक्षक अपने विद्यार्थियों को बेहतर ज्ञान और अनुभव प्रदान कर पायेगें। नवीन बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को देखते हुए शोधार्थी के मन में कुछ प्रश्न उत्पन्न हुए–

- बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की क्या अभिवृति है?
- क्या नवीन पाठ्यक्रम से शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को कुछ समस्याएं उत्पन्न हुई है?
- शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की इन्टर्नशिप कार्यक्रम के प्रति क्या अभिवृति है?

- बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में इन्टर्नशिप कार्यक्रम में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को क्या क्या समस्याएं हुई है?
- बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षकों की क्या अभिवृति है?

उपरोक्त प्रश्नों का हल जानने के लिए तथा संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन करने के पश्चात शोधार्थी ने पाया कि पुराने पाठ्यक्रम एवं प्रैक्टिस टीचिंग से संबंधित तो अनेक शोध कार्य हो चुके है लेकिन नवीन द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम एवं इन्टर्नशिप कार्यक्रम से संबंधित शोध कार्य नगण्य है। अतः शोधार्थी ने बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं इन्टर्नशिप कार्यक्रम के प्रति अभिवृति एवं समस्याओं का अध्ययन करने का निर्णय लिया है।

समस्या कथन

राजस्थान के शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में संचालित द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की वर्तमान में प्रासंगिकता एक अध्ययन

उद्देश्य

1. बी.एड.द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं व्याख्यताओं की अभिवृति का अध्ययन करना।
2. बी.एड.द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में इन्टर्नशिप कार्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं व्याख्यताओं की अभिवृति का अध्ययन करना।
3. बी.एड.द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत इन्टर्नशिप कार्यक्रम में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।
4. बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की नियमित उपस्थिति का अध्ययन करना।
5. बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत व्याख्याताओं की संतुष्टि का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. बी.एड.द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं व्याख्यताओं की अभिवृति के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. बी.एड.द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में इन्टर्नशिप कार्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं व्याख्यताओं की अभिवृति के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. बी.एड.द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत इन्टर्नशिप कार्यक्रम में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को आने वाली समस्याओं के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की नियमित उपस्थिति के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत व्याख्याताओं की संतुष्टि के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तकनीकी शब्दावली

बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम – पाठ्यक्रम पाठयवस्तु का सुव्यवस्थित रूप है जो विभिन्न आयु के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तथा निश्चित लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होता है। प्रस्तुत शोध में बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम से तात्पर्य वर्तमान में बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानो में संचालित नवीन द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम से है जिसे NCTE द्वारा वर्ष 2015 से लागू किया गया है।

इन्टर्नशिप कार्यक्रम – किसी कार्य विशेष को कुशलता के साथ करने के लिए ज्ञान कुशलता अभिरूचि तथा क्षमताओं में वृद्धि करने के लिए प्रशिक्षण को इन्टर्नशिप कहते है। प्रस्तुत शोध में इन्टर्नशिप से तात्पर्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के सेवा पूर्व विद्यालय वातावरण एवं परिस्थितियों से परिचित होना है तथा बी.

एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत होने वाले इन्टर्नशिप कार्यक्रम से है जिसमें छात्राध्यापकों को विद्यालय में शिक्षण कार्य करना होता है।

अभिवृति – अभिवृति किसी व्यक्ति वस्तु या घटना के प्रति एक खास ढंग से अनुक्रिया करने की एक मानसिक तत्परता होती है। प्रस्तुत शोध में अभिवृति से तात्पर्य बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं इन्टर्नशिप के प्रति दृष्टिकोण से है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण व साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया जायेगा।

चर

स्वतंत्र चर – बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम, इन्टर्नशिप कार्यक्रम

आश्रित चर – अभिवृति

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के समस्त बी.एड. कॉलेज एवं समस्त विद्यालय को जनसंख्या के रूप में माना जायेगा।

न्यादर्श चयन की विधि

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि के द्वारा किया जायेगा।

न्यादर्श

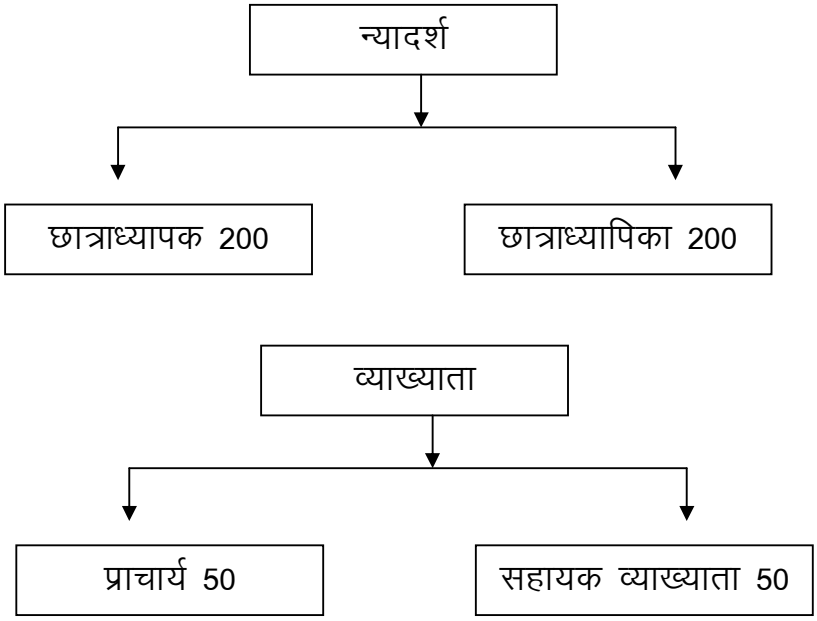

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित, संतुष्टि मापनी, अभिवृति मापनी प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में प्रदतों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणित विचलन और टी टेस्ट का प्रयोग किया जायेगा।

आंकडो के स्रोत

प्रस्ततु शोध में शोधार्थी द्वारा आंकडों का एकत्रीकरण का माध्यम प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों पर निर्भर होगा

परिसीमाकंन

1. प्रस्तुत शोध कार्य को जयपुर जिले की चारो दिशाओं तक सीमित रखा जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध कार्य में जयपुर जिले के केवल बी.एड. कॉलेज को ही सम्मिलित किया जायेगा।
3. प्रस्तुत शोध में बी.एड. प्रशिक्षणार्थी एवं बी.एड. कॉलेज के सह व्याख्याताओं व प्राचार्य को ही सम्मिलित किया जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राय, पारसनाथ (2011), शैक्षिक अनुसंधान परिचय जयपुर : लक्ष्मीनारायण प्रकाशन
2. बेस्ट, जॉन डब्ल्यु (1958). रिसर्च इन एजूकेशन प्रेक्टिस हॉले. (इंक) यू. एस.ए. : ऐगिल बुक क्लिफस
3. अस्थाना, विपिन (2009) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकंन वाराणसीः विजय प्रकाशन
4. शर्मा आर.ए. (2014) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व ए वं शोध प्रक्रिया जयपुर : आर लाल डिपो
5. शर्मा योगेन्द्र कुमार व शर्मा, मधुलिका (2008) शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार नई दिल्ली, कनिष्क पब्लिशर्स
6. पालीवाल, शिखा व नाटाणी प्रकाश नारायण (2008) शिक्षा के समाजशास्त्री आधार जयपुर मोडर्न प्रिन्टर्स
7. सिंह, अरूण कुमार (2010) शिक्षा मनोविज्ञान पटना भारती भवन पब्लिशर्स
8. बोर्ग डेलनपेन; (1958) "अण्डर स्टेडिंग एजुकेशन रिसर्च", न्यूयार्क, मेक्ग्राहिल बुक कम्पनी
9. कपिल एच.के.; (1998) "अनुसंधान विधियाँ", आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस
10. कपिल एच.के.; (2007) "सांख्यिकी के मूल तत्व", आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस
11. करलिंगर एफ.एन.; (2002) "फाउंडेशन ऑफ बिहेवरियल रिसर्च", न्यूयार्क, सेन्चुरी क्राफ्ट
12. कुलश्रेष्ठ एस.पी.; (2008) ''शिक्षा मनोविज्ञान'', मेरठ आर.लाल बुक डिपो

13. मंगल अंशु बरौलिया, ए. अग्रवाल; (2007)''शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी'', आगरा, राधा प्रकाशन मन्दिर

14. भार्गव महेश; (1997) "मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन", आगरा, हरप्रसाद भार्गव बुक हाउस, शैक्षिक प्रकाशन

15. भटनागर ए.बी., भटनागर मीनाक्षी; (2006) "भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास", मेरठ, आर.लाल बुक डिपो

16. पुरोहित जगदीश नारायण, शर्मा मुरली मनोहर; (2002) "भावी शिक्षकों के लिये आधारभूत कार्यक्रम", जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पंचम संस्करण

17. रमल जे.एम.एन.; (1986) "इन्ट्रोडक्शन टू रिसर्च पोजीशन इन एजुकेशन", न्यूयार्क, हार्पर ब्रदर्स